

## गुजरात की शिल्प विरासत का संरक्षण: जीआई टैग सम्मान

- गुजरात के चार शिल्पों को ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग मिला है
- यह पहल हस्तकला योजना के तहत की गई थी, जो गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्त द्वारा की गई एक पहल है, जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) ने सहयोग किया
- अब तक परियोजना के तहत 20 शिल्पों को जीआई टैग मिल चुका है

**16 मई, 2024: भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद** को गुजरात की समृद्ध विरासत शिल्प के संरक्षण और प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण उपलब्धि घोषित करते हुए खुशी हो रही है। गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्त के सहयोग से, ईडीआईआई ने गुजरात के चार पारंपरिक शिल्पों की ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैगिंग की सुविधा प्रदान की है।

हालिया जीआई टैगिंग, गुजरात के कारीगर समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय (डीपीआईआईटी) के तहत जीआई रजिस्ट्री कार्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त शिल्प में **गुजरात सूफ कढ़ाई, अहमदाबाद सोडागरी ब्लॉक प्रिंट, सूरत सादेली शिल्प और भरुच सुजानी बुनाई** शामिल है।

गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना के एक प्रमुख ज्ञान भागीदार के रूप में, ईडीआईआई ने इन शिल्पों में लगे शिल्प-उद्यमियों को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सहकारी समितियों के गठन में सहायता से लेकर जीआई टैगिंग के बाद के हस्तक्षेपों को सुविधाजनक बनाने तक, ईडीआईआई गुजरात की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध रहता है।

ईडीआईआई अहमदाबाद परिसर में एक विस्तृत समारोह में कारीगरों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि **श्री प्रवीण सोलंकी, आयुक्त एवं सचिव, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग, गुजरात सरकार, विशेष अतिथि श्री बी के सिंघल, मुख्य महाप्रबंधक/ओआईसी, नाबाई और प्रतिष्ठित अतिथि श्री कार्तिकेय वी. सारभाई, सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल एजुकेशन (सीईई) के संस्थापक निदेशक, डॉ. सुनील शुक्ला, महानिदेशक - ईडीआईआई और डॉ. सत्य रंजन आचार्य, हस्तकला सेतु परियोजना के प्रोजेक्ट निदेशक भी उपस्थित थे।**

इस मौके पर **श्री प्रवीण सोलंकी** ने कहा, "राज्य अपनी कला विरासत से अपनी पहचान प्राप्त करता है। गुजरात अनोखी कलाओं का घर है, और इन्हें पोषित करना हमारी जिम्मेदारी है। और, इसलिए, ईडीआईआई के समर्थन से, गुजरात सरकार समृद्ध शिल्प विरासत को संरक्षित करने और कारीगरों को मान्यता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। जबकि कौशल प्रशिक्षण कारीगरों को अपनी पहचान बनाने में मदद कर रहा है, मुझे खुशी है कि हमने इन शिल्पों की विशिष्टता स्थापित करते हुए जीआई टैग हासिल कर लिया है।"

**श्री बी के सिंघल** ने कहा, "पारंपरिक कला और शिल्प कौशल हमारी विरासत है, और इसे पोषित और मान्यता देने की आवश्यकता है। मुझे खुशी है कि ईडीआईआई के तत्वावधान में 4 और अद्वितीय शिल्पों को जीआई टैग प्रदान किया गया है। हस्तकला परियोजना और जीआई टैगिंग इस बात का प्रमाण है कि गुजरात की पारंपरिक कला के पास एक मजबूत बाजार और प्राथमिकता है। लघु उद्योगों, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्प और अन्य ग्रामीण शिल्पों को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड की प्रतिबद्धता को देखते हुए, मैं इस विकास से विशेष रूप से प्रसन्न हूँ।"

**श्री कार्तिकेय वी. साराभाई** ने कहा, "भारत कारीगरों द्वारा पीढ़ियों से संरक्षित अपनी शिल्प परंपराओं की विविधता में समृद्ध है। प्रत्येक परंपरा उस प्राकृतिक वातावरण से निकटता से संबंधित है जिसके भीतर ये शिल्प विकसित हुए हैं। ये हमारे राष्ट्र का गौरव हैं और भारत की कई हजार वर्षों की अटूट परंपरा का प्रमाण हैं। जीआई टैगिंग उन्हें सुरक्षा और मान्यता दोनों देती है और अनधिकृत नकल के डर के बिना नए बाजार खोलती है। मुझे यकीन है कि यह विकास शिल्प को मजबूत करने और कारीगरों के उद्यमियों को दुनिया भर में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए नए रास्ते तैयार करेगा।"

परियोजना की कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में ईडीआईआई की भूमिका के बारे में विस्तार से बताते हुए, **डॉ. सुनील शुक्ला** ने कहा, "ईडीआईआई हस्त कला योजना परियोजना के तहत उद्यमियों को उनके कौशल और ज्ञान को बढ़ाने, उन्हें नए बाजार देने और ग्राहकों तक पहुंचने में आसानी को बढ़ावा देने के लिए मदद कर रहा है। आज, वे उच्च मांग वाले नवीन, विपणन योग्य उत्पाद बना रहे हैं और दृश्यता प्राप्त कर रहे हैं। जीआई टैगिंग उनके अद्वितीय शिल्प को मान्यता देने की दिशा में एक बड़ा कदम है।"

**हस्तकला सेतु योजना और जीआई प्रमाणपत्र से सम्मानित 4 शिल्पों के बारे में**

2020 में शुरू की गई, हस्तकला सेतु योजना गुजरात के 33 जिलों में कारीगरों को सशक्त बनाने में

सहायक रही है। व्यावहारिक कौशल और बाजार अनुभव प्रदान करने पर ध्यान देने के साथ, 33,939 से अधिक कारीगरों को जागरूक किया गया है और 22,000 से अधिक ने उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जो राज्य में उद्यमशीलता और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए ईडीआईआई की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

### शिल्प स्पॉटलाइट: गुजरात की शिल्प परंपराओं का जश्न

- **गुजरात सूफ कढ़ाई:** बनासकांठा और कच्छ क्षेत्रों से उत्पन्न, सूफ कढ़ाई अपनी ज्यामितीय गणना-आधारित रिवर्स कढ़ाई तकनीक के लिए प्रसिद्ध है, जो मेघवाल और मारू समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।
- **अहमदाबाद सोडागरी ब्लॉक प्रिंट:** गुजरात की पुष्प विरासत का एक प्रमाण, सोडागरी ब्लॉक प्रिंट सागौन की लकड़ी के ब्लॉकों पर उकेरे गए अपने नाजुक पैटर्न के साथ मोहित करना जारी रखता है, जो छीपा-मुस्लिम समुदायों के कुशल कारीगरों द्वारा कायम रखी गई एक पोषित परंपरा है।
- **सूरत सादेली शिल्प:** 19वीं शताब्दी की एक बेहतरीन लकड़ी की परंपरा, सादेली शिल्प विभिन्न सामग्रियों से इकट्ठे किए गए जटिल पैटर्न को प्रदर्शित करता है, जो सूरत शहर में पेटेगारा परिवारों की महारत का एक प्रमाण है।
- **भरुच सुजानी बुनाई:** इसकी जड़ें 1860 के दशक में हैं, भरुच की सुजानी बुनाई कपास के बादलों से भरे जटिल ज्यामितीय डिजाइनों का उदाहरण देती है, जो सुजनीवाला, चिशितया और मिया मुस्तफा के परिवार की विरासत को संरक्षित करती है।